Indian Journal of Social Sciences and Literature Studies
ISSN 2349-5634 (Print) ISSN 2455-0973 (Online)
Vol. 7, Issue 2, October 2021

श्री राम साहित्य में आदर्श संस्कृति
('रघुवंशम्' के संदर्भ में)

*પ્રો. ડૉ. સુરવીરસિંહ આઈ. ઠાકોર
આર્ટસ્ એન્ડ કોમર્સ કૉલેજ,
ઓલપાડ, જિ. સુરત

अनेक विदेशी जातियों ने इस देश पर आक्रमण किए । यवन, शक, कुशाल, हूण, तुर्क, अफगान, मुगल और इंगलिश जातियों ने भारत में प्रवेश कर इसके अनेक भागों पर शासन किया । इन सब ने इस देश की संस्कृति को प्रभावित भी किया, पर इनसे यहाँ की मूल संस्कृति की धारा नष्ट नहीं हुई । जिस प्रकार अनेक छोटी–छोटी नदियाँ व नाले गंगा में मिलकर उसे अधिक समृद्ध करते जाते हैं, और स्वयं गंगा के ही अंग बन जाते हैं, वैसे ही विविध जातियों ने भारत में प्रवेश कर इस देश की संस्कृति को समृद्ध बनाने में सहायता की, और उनकी अपनी संस्कृतियाँ इस देश की उन्नत व समृद्ध संस्कृति में मिलकर अपनी पृथक सत्ता खो बैठी, और यहाँ की संस्कृति के साथ एकाकार हो गयी ।

भारत का इतिहास प्रारंभ हुए हजारों वर्ष व्यतीत हो चूके है । इस देश की सभ्यता संसार की प्राचीनतम सभ्यताओं में गिनी जाती है । वेद दुनिया का सबसे प्राचीन साहित्य है । भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति हजारों साल बीत जाने पर भी अब तक कायम है । भारत का धर्म अब भी वैदिक है, इस देश के पुरोहित व ब्राह्मण आज भी वेद मंत्रें द्वारा यज्ञकुण्ड में आहुति देकर देवताओं व प्राकृतिक शक्तियों को तृप्त करते हैं । उपनिषदों और गीता ने ज्ञान की जो धारा प्रवाहित की थी, वह आज भी अबाधित रूप से इस देश में बह रही है । बुद्ध और महावीर जैसे महात्माओं ने अहिंसा और प्राणि मात्र के अति मैत्री भावना का जो उपदेश दिया था, वह आज तक भी इस देश में जीवित और जागृत है । यहाँ की स्त्रियों का आदर्श इस 21वीं सदी में भी सीता, सावित्री और पार्वती है । किसी देश की संस्कृति अपने को धर्म, दार्शनिक विचार, कविता, साहित्य और कला आदि के रूप में अभिव्यक्त करती है । भारत की संस्कृति ने अपने को जिस रूप में अभिव्यक्त किया, उसकी मुख्य विशेषता आध्यात्म की भावना है ।

भारत में ऐसे अनेक तत्त्व विद्यमान है, जो इस विशाल देश में अनेक प्रकार की विभिन्नताओं को उत्पन्न करते हैं । इस देश की भौगोलिक दशा भी सर्वत्र एकसदृश नहीं है । कहीं मैदान तो, कहीं पर्वतीय प्रदेश, कहीं रेगिस्तान तो कहीं सालाना बारिस । वैसे ही हिन्दी, गुजराती, मराठी, तेलुगू, तमिल, बंगला आदि अनेक भाषा बोली जाती है । धर्म की दृष्टि से भी इस देश में हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध, जैन, पारसी आदि धर्म यहाँ विद्यमान है । फिर भी यहाँ 'विविधता में एकता' का दर्शन करने को मिलता है । भारत की संस्कृति में यही विशेषता है ।

*પ્રો. ડૉ. સુરવીરસિંહ આઈ. ઠાકોર, આર્ટસ્ એન્ડ કોમર્સ કૉલેજ, ઓલપાડ, જિ. સુરત
Associate Professor, Dept of Sanskrit

सांस्कृतिक एकता भारत की एक भारी विशेषता है । इस देश के न केवल हिन्दू, अपित्तु मुसलमान, पारसी आदि भी एक ही संस्कृति के रंग में रंगे हुए हैं । राम और कृष्ण के आदर्श, अर्जुन और भीम की वीर–गाथाएँ व नानक और तुलसी के उपदूश उन्हें समान रूप से प्रभावित करते हैं । संस्कृति की यह एकता ऐसी है, जो नसल, भाषा आदि के भेद की अपेक्षा अधिक महत्त्व की है ।

इक्ष्वाकुवंश के राजा रामचन्द्र का वृत्तांत रामायण में बड़े विस्तार के साथ वर्णित है । इसके रचनाकार वाल्मीकि संस्कृत भाषा के आदिकवि माने जाते हैं, और रामायण को आदिकाव्य कहा गया है । रामायण को लेकर अनेक भाषाओं में हजारों पुस्तकें लिखे गये हैं । राम का चरित्र ही ऐसा था, कि आर्य जाति उसे कभी भुला नहीं सकती । राम आदर्श पुत्र, आदर्श भाई और आदर्श पति थे । रामायण का प्रत्येक चरित्र आदर्श है । कौशल्या जैसी माता, लक्ष्मण जैसा भाई, सीता जैसी पत्नी, हनुमान जैसा सेवक और राम जैसा प्रजापालक राजा संसार के साहित्य में अन्यत्र ढूंढ़ सकना कठिन है ।

रामायण का प्रभाव परवर्ति साहित्य में भी बहुत गहरा पड़ा है । अनेक कवियों द्वारा रचित 'जानकीजीवनम्', 'हनुमान्नाटकम्, आनन्द–रामायण, प्रसन्नराघवम्, महावीरचरितम्, उत्तररामचरितम्, रघुवंशम् जैसी रचनाएँ प्राप्त होती है । उन सभी कृतियों का हम सूक्ष्मेक्षिका से अभ्यास करेंगे तो पता चलता है कि उन सभी कृतिओं ने आदर्शवाद, संस्कृति, सभ्यता का ही बाहुल्य प्रगट होता हुआ दिखाई देता है ।

वाल्मीकि कृत रामायण में राम के जीवन मूल्यों की चर्चा करते हुए अपने विचार को प्रगट करते श्री रमेश बेटाई ने लिखा है कि – જીરામના હ્વનમૂલ્યોને સંક્ષેપમાં આપણે આ રીતે રજૂ કરી શકીએ ....

(અ) રાગદ્વેષથી સર્વથા મુપત હ્વન.

(બ) ધર્મ અને નીતિપરાયણ, સદાચાર ભર્યો વ્યવહાર.

(ક) પંગુને પંગુ ન કહેવો, દુષ્ટને દુષ્ટ ન કહેવો, પરંતુ પંગુની પંગુતાનું અને દુષ્ટની દુષ્ટતાનું દમન કરવા સતત પ્રયત્નરત રહેવું.

(ડ) પોતાના વ્યપિતત્વ ઉપર સંસારના આઘાત–પ્રત્યાઘાતની ઓછામાં ઓછી અસર પડવા દેવી અને કેવળ કર્તવ્ય પરાયણ રહેવું.

(ઇ) વ્યપિત ગમે તે કક્ષાએ હોય તે સમગ્ર સમાજની ચેતનામાં પોતાની ચેતનાને વિલુપ્ત કરી અને સૌના સુખ માટે સ્વસમર્પણ કરે. આવું સમર્પણ રામે પોતે જ પોતાનું સમાજ હ્વનમાં કરી દીધું."[૧]

महाकवि कालिदास रचित 'रघुवंशम्' महाकाव्य विश्वसाहित्य में अन्यतम स्थान का अधिकारी है । कवि कालिदास ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति की विशेषताओं को रेखांकित करने का सफल प्रयत्न किया है । भारतीय संस्कृति में वर्ण–व्यवस्था और आश्रम व्यवस्था का ऐसा समन्वय स्थापित है, जिसका समुचित पालन किसी भी व्यक्ति को एक आदर्श भारतीय सिद्ध करता है । रघुवंश के राजाओं को धार्मिक प्रवृत्तिवाला प्रतिपादित किया है । इन राजाओं में भी श्री राम तो धर्म के ही अवतार थे । महाकवि ने दशरथ के चारों पुत्रें को क्रमशः धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के अवतार की तरह प्रतिपादित किया है – 'धर्मार्थकाममोक्षाणामवतारे इवाइगमाक्'[२]

रघुवंश के श्री राम का आचार और व्यवहार सर्वत्र धर्मानुकूल तथा धर्मशास्त्रीय सिद्धांतो के अनुकूल है । हमारे प्राचीन धर्मशास्त्रीय ग्रंथ मानवों के जीवन को तथा सामाजिक संरचना को सुव्यवस्थित रखने के लिए आश्रम व्यवस्था

और वर्ण–व्यवस्था की परिकल्पना करते हैं । धर्मशास्त्रीय ग्रंथों में इस तथ्य का भी प्रतिपादन हुआ है कि राजा ही पृथ्वी पर लोगों में आश्रम–व्यवस्था और वर्ण–व्यवस्था के अनुरूप कार्य करने के लिए प्रेरित भी करता है और उसके विपरीत आचरण करने पर उन्हें दण्डित भी करता है । श्री राम का चरित्र सर्वत्र इसी रूप में चित्रित हुआ है कि उनके आदर्श राज्य में सभी वर्णाश्रम व्यवस्था के अनुरूप आचरण करने वाले थे और वे भी स्वयं मनु आदि के द्वारा निर्दिष्ट वर्णाश्रम धर्म का पालन करने वाले थे ।

रामचरित पर रचित 'रघुवंशम्' महाकाव्य में चतुर पुरुषार्थ का भी अच्छी तरीके से निर्वहण किया गया है । जिससे समग्र मानव जीवन को बोध प्राप्त होता है । विविध जीवन स्थितियों के प्रसंगो में गम्भीर भावनाएँ एवं विचारणाएँ प्रस्तुत हुई है । रामचरित्र से विवेक, क्षत्रिय धर्म, कृतज्ञता, कर्तव्य निर्वाह, दान, विनम्रता, परोपकार, अतिथि सत्कार, पतिधर्म, पत्नी रक्षा, पिता की आज्ञा का पालन, भातृप्रेम, धर्म परायणता, लोक कल्याण, वचनबद्धता आदि अनेक सद्‌गुणों का बोध समाज कल्याण – उत्थान के प्रेरक रूप में प्रतिबिम्बित होते हैं, जिससे आगे जाकर भारत वर्ष की आदर्श संस्कृति की कूच बढ़ती हुई दिखाई देती है ।

इस तरह हम देखते हैं कि रामचरित्र, राम–साहित्य और 'रघुवंशम्' के श्री राम का सारा जीवन उनका सारा कार्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के निर्वहण संस्कृति तथा संस्कार का उत्तम परिचायक रहा है और यही संस्कृति और सभ्यता भारतवर्ष की वैदिक काल से लेकर आज तक रही है और यही मानव जीवन का मूल आदर्श तथा सुख का पर्याय है ।

–00–

संदर्भ ग्रंथ :

१. સંસ્કૃત સાહિત્યમાં શ્રીરામ – પૃ. ૩૭

२. 'रघुवंशम्' – 10.84